संरक्षक की कलम से ...

प्रिय पाठकों,

आज यह कहने की किंचित भी आवश्यकता नहीं कि जल समस्त प्राणियों के जीवन को बनाए रखने के साथ-साथ कृषि उत्पादन में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उल्लेखनीय है कि हमारे देश में भूमि और जल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है परंतु बढ़ती जनसंख्या और शहरीकरण के चलते मानव द्वारा अनावश्यक रूप से प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करने के कारण भूमि और जल की उपलब्धता तेजी से घट रही है। आज हमारा देश ही नहीं अपितु पूरा विश्व जल के गंभीर संकट से जूझ रहा है। ऐसे में जल का संरक्षण और सदुपयोग करना नितान्त आवश्यक हो गया है अन्यथा भविष्य में यह समस्या एक विकराल रूप धारण कर लेगी और आने वाली पीढ़ियों को इसके लिए घोर संघर्ष करना पड़ेगा। हमारे देश के जल संसाधन पेयजल, कृषि, जलविद्युत उत्पादन, पशुधन उत्पादन, औद्योगिक गतिविधियों, वानिकी, मत्स्य पालन, नौपरिवहन, मनोरंजक गतिविधियों और पारिस्थितिक आवश्यकताओं आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

आज न केवल भारत में, अपितु पूरे विश्व में शुद्ध जल उपलब्धता में निरंतर गिरावट आ रही है। हमारी वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के लिए पर्याप्त जल सुनिश्चित करने के लिए जल संसाधनों का सतत विकास एवं प्रबंधन सबसे चुनौतीपूर्ण कार्यों में से एक है। वर्षों से हमारे अभियंताओं, वैज्ञानिकों, प्रशासकों और नियोजकों के निरंतर प्रयासों से देश के जल संसाधनों के उपयोग में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। बेहतर प्रयासों के बाबजूद, हम अभी भी जल क्षेत्र में अनेक कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। विभिन्न स्रोतों से प्रदूषक भार बढ़ने के कारण सतही और भूजल संसाधनों की गुणवत्ता निरन्तर खराब हो रही है। ऐसी स्थिति में जल संसाधन प्रबंधन एवं अनुसंधान पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। व्यर्थ बहने वाले जल को सतही एवं भूजल जलाशयों में एकत्र करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रुड़की, पिछले 13 वर्षों से तकनीकी एवं वैज्ञानिक विषयों की जानकारियों को सामान्य जनमानस तक हिंदी भाषा के माध्यम से पहुंचाने के उद्देश्य से इस पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। इस पत्रिका का उद्देश्य हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन को प्रोत्साहित करना है। विद्वत लेखकों की रोचक एवं महत्वपूर्ण रचनाओं के सहयोग से इस पत्रिका का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है। हमें ज्ञात है कि जीवन के इस अति-आवश्यक संसाधन की सुरक्षा की जिम्मेवारी देश के हर नागरिक की है। अतः देश के हर नागरिक को जल संरक्षण से जुड़ना होगा। आज हमें जल के महत्व, उसके संरक्षण तथा जल की प्रत्येक बूंद के सदुपयोग की जानकारी आम जनता को देने की आवश्यकता है। हमारे देश में समय और स्थान के अनुसार जल संबंधी समस्याएं भिन्न-भिन्न हैं। इन्हीं समस्याओं के समाधानों और उपायों की जानकारी को जनमानस तक पहुंचाने का कार्य हमारी यह पत्रिका विगत 13 वर्षों से निरंतर करती आ रही है।

मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को समुचित बढ़ावा देने के लिए वर्षभर हिंदी की भिन्न-भिन्न गतिविधियां आयोजित करता रहता है। हमारा प्रयास रहता है कि प्रशासनिक कार्यों के साथ-साथ तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रकृति के कार्यों में भी राजभाषा हिंदी का यथासंभव प्रयोग किया जाए। उल्लेखनीय है कि संस्थान के कार्य वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रकृति के हैं और आमतौर पर यह समझा जाता है कि तकनीकी कार्यों का निष्पादन हिंदी में कर पाना सहज नहीं है। फिर भी प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के जरिए इन कार्यों में हिंदी का समुचित प्रयोग करने के प्रयास जारी हैं और इस दिशा में धीरे-धीरे ही सही लेकिन काफी हद तक सफलता प्राप्त हो रही है।

मैं उन समस्त विद्वत लेखकों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने इस पत्रिका के लिए अपने रोचक, महत्वपूर्ण तथा उपयोगी लेख भेजकर इसके प्रकाशन में हमें महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पत्रिका का संपादक मंडल बधाई का पात्र है।

मैं पत्रिका की अपार सफलता की कामना करता हूं।

(डॉ. सुधीर कुमार)